साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 26, दिसम्बर(प्रथम), 2017

कॉस्मिक काऊ

- *नीरजा माधव*

'अर्थ डे' (पृथ्वी दिवस) पर मुझे धरती की आकुलता याद आई, उसका भूगर्भीय और पर्यावरणीय क्षरण याद आया और गाय की तरह सरला प्रकृति वाली धरती का दोहन याद आया तो बरबस ही ध्यान राम पर चला गया जिन्हें गोस्वामी तुलसीदास ने भूपाल चूड़ामणि कहा है। पालनकर्ता के रूप में विष्णु के दो प्रमुख अवतरण हमारे मस्तिष्क में कौंधते हैं—एक, भूपाल और दूसरा गोपाल। यह अकस्मात् नहीं कि वेदों समेत अनेक आर्ष ग्रन्थ पृथ्वी को गो रूप में वर्णित करते हैं। तो गोपाल और भूपाल को एक मानते हुए राम पर आती हूँ। भू पाल यानी पृथ्वी का पालन पोषण करने वाले। राम का भूपाल होना पूरी पृथ्वी के अस्तित्व के लिए और पृथ्वीवासियों के लिए गूढ़ मायने रखता है।

हमारे लिए 'पर्यावरणीय स्थिरता' हर काल में आवश्यक थी। चाहे राम का समय रहा हो अथवा आज का तथाकथित वैज्ञानिक रूप से अत्यन्त विकसित समय। यह पर्यावरणीय स्थिरता जब जब समाप्त हुई है, पृथ्वी के अस्तित्व के लिए संकट पैदा हुआ है। अपने विराट पर्यावरणीय दृष्टिकोण के कारण भी राम भू पाल हैं। पूरी पृथ्वी के पालनकर्ता। किसी एक खण्ड के नहीं और न ही किसी एक राष्ट्र के। सम्पूर्ण पृथ्वी पर वे पर्यावरणीय स्थिरता के प्रतीक हैं। विष्णु के अवतार भी इसीलिए कि विष्णु पालनकर्त्ता हैं, पूरी पृथ्वी के, पूरे ब्रह्माण्ड के। इसीलिए पृथ्वी रावण के अत्याचारों से घबड़ाकर गाय रूप धारण कर भगवान् विष्णु के पास जाती है। यह उसकी व्याकुलता ही तो थी।

रावण का भी अत्याचार पृथ्वी के किसी एक खण्ड पर तो नहीं ही था। प्राकृतिक संसाधनों के वैश्विक स्तर पर दोहन का प्रमाण रावण द्वारा दास बनाये गये सूर्य, चन्द्रमा, पवन, वरुण और अग्नि तो थे। यानी पूरे ब्रह्माण्ड से प्राकृतिक स्रोतों का अन्धा धुन्ध शोषण रावण द्वारा किया जा रहा था। भूगर्भीय खनिजों और रत्नों का भी दोहन हो रहा था। अकेले स्वर्ण से ही निर्मित उसकी लंका नगरी, जिसे उसने अपना निवास स्थान बनाया था, रावण द्वारा किये गये खनिज दोहन का एक प्रमाण था। यानी यह सब घटित हो रहा था वैश्विक स्तर पर, भूमण्डल के स्तर पर। भूमण्डलीकरण का एक निगेटिव पक्ष रावण और उसी का एक पाजिटिव पक्ष राम। राम द्वारा धरती को इस विनाशलीला से बचा लेने का वैश्विक उद्देश्य। कुछ लोगों के लिए राम की बातें करना अप्रासंगिक प्रतीत हो सकती हैं परन्तु मेरी दृष्टि में तो राम के बहाने एक विचार करने का महत्त्वपूर्ण बिन्दु है कि कहीं आज के भूमण्डलीकरण से भी पूर्व विराट ग्लोबलाइजेशन के हम उत्तराधिकारी तो नहीं, जहाँ राम अवतार ही लेते हैं धरती रूपी गाय का आततायियों से उद्धार करने के लिए? सम्पूर्ण पृथ्वी का उद्धार।

''अतिसय देखि धर्म कै ग्लानि/परम सभीत धरा अकुलानी'', और विष्णु की ब्रह्मवाणी गूँज उठती है—''हरिहउँ सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई।'' तो राम के अवतार का कारण ही पृथ्वी की विकलता है, वरुण, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा जैसे अनेक देवों की करुण पुकार है जो पृथ्वी के रत्नगर्भा या शस्य श्यामला होने के हेतु हैं।

पृथ्वी की विकलता और रामावतार के उद्देश्य को यहीं छोड़ते हुए हम पृथ्वी और ब्रह्माण्ड की वर्तमान परिस्थिति की ओर एक विहंगम दृष्टि फेरते हैं। दुर्गा सप्तशती के एक श्लोक का ध्यान आता है-

यावत् भूमण्डलं धते सशैलवनकाननम् ।
तावत् तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र पौत्रिकी।।

मनुष्य का पृथ्वी पर अस्तित्व तभी तक है जब तक जंगल, पहाड़, नदियाँ आदि हैं और हम पाते क्या हैं कि—

(1) क्लोरो फ्लोरो कार्बन या हेलोकार्बन के कारण मानव से लेकर जीव जन्तुओं, वनस्पतियों तक के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ रहा है। जाहिर सी बात है कि इसका उत्पादन मानव मस्तिष्क की देन है जो धरती का पोषक तो नहीं ही कहा जा सकता। 21 अक्टूबर 2006 को नासा ने विश्व को सूचित किया कि इन खतरनाक गैसों के दुष्प्रभाव से ओजोन परत में जो छेद हुआ था उसका आकार बढ़कर उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के आकार से भी बड़ा हो गया है। यह सम्भवतः हमारी विलासितापूर्ण जीवनशैली की देन है मानव समाज को। अल्ट्रा वायलेट के जैविक प्रभावों से व्याकुल है पृथ्वी। क्या वन वन विचरण करने वाले राम या पर्णकुटी में रहने वाले राम का जीवन हमारे लिए आदर्श नहीं बन सकता?

(2) विश्व के अनेक विचारक, वैज्ञानिक और विश्लेषक अब यह मानने लगे हैं कि अगला विश्वयुद्ध सम्भवतः पानी को लेकर होगा क्योंकि प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता लगातार कम हो रही है। विश्व की आबादी लगातार बढ़ रही है और पानी के साथ ही अन्य भौतिक संसाधनों की कमी बराबर हमें खतरे का संकेत कर रही है। नदियों को बाँधकर विद्युत का उत्पादन और उसके बेहिसाब खपत से क्या आने वाली पीढ़ियों के साथ हम छल नहीं कर रहे? राम का आदर्श फिर हमें जीवन जीने का और विकास का एक सनातन भारतीय मॉडल देता है। दशरथ की तीन रानियाँ थीं। उस काल में भी बहुपत्नी विवाह था प्रचलन में। कहीं कहीं सम्पत्ति को बचाए रखने या अन्य कारणों से बहुपति विवाह भी था जो आज तक तिब्बत जैसे सीधे-सादे राष्ट्र में दिखाई पड़ता है। परन्तु पृथ्वी को उस काल में आबादी विस्फोट से बचाने के लिए राम एक पत्नी व्रत धारण करते हैं। पहल स्वयं करके दिखानी पड़ती है। उनका अनुकरण उनके अन्य भाई भी करते हैं। कोई कह सकता है कि सबके धर्म में अलग अलग मान्यताएँ हैं। तो धर्म है क्या? क्या पृथ्वी के दिव्यत्व और उसकी प्रकृति को नष्ट करते जाना धर्म है? भूमि की उर्वरा शक्ति और पोषण क्षमता को नष्ट करते जाना धर्म है? वन्य जीवों, पशु पक्षियों, वनस्पतियों, वर्षा, बादल नदियों पहाड़ों को नष्ट करते जाना धर्म है? दरअसल पहाड़ों का फटना, नदियों का सूखना, ग्लेशियर का पिघलना, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वन वर्षा का नष्ट होना, ये सब साधारण आपदाएँ नहीं हैं।

एक बार आकाशवाणी वाराणसी के लिए एक वैज्ञानिक से विलुप्त होती वनस्पतियों और पर्यावरण विषय पर साक्षात्कार लेते हुए एक सम्भावना यह भी जताई गई कि सन् 2040 के बाद मनुष्य की जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी आयेगी। कारण, शिक्षा के प्रभाव कारण उसके बढ़ते खतरों के प्रति जागरूकता और दूसरा बड़ा जैविक कारण-पर्यावरण प्रदूषण से मनुष्य की प्रजनन क्षमता का कमजोर हो जाना। यानी सन्तान उत्पत्ति की क्षमता पर ही पर्यावरणीय असन्तुलन का दुष्प्रभाव पड़ेगा।

धर्म की बात पर ही याद आता है कि कुछ लोगों के लिए पशुओं का वध उनका धर्म हो जाता है। इतिहास में एक पशु ने अपनी अद्भुत संवेदनशीलता का परिचय देते हुए किसी मनुष्य के जीवन रक्षा के लिए उसके स्थान पर स्वयं को बलि के लिए प्रस्तुत कर दिया। स्पष्ट सी बात है कि हमें, यानी सम्पूर्ण

मानव समुदाय को उसका कृतज्ञ होना चाहिए, परन्तु बदले में हम क्या करते हैं? एक विशेष दिन और विशेष समय पर हम उसकी तमाम अगली पीढ़ियों की बलि देने लगे? कृतघ्नता की पराकाष्ठा। उस पशु के एहसानों का बदला भी हमने दिया तो कितने विध्वंसक तरीके से कि उसकी नई पीढ़ियाँ विकल होती हैं और उनकी निःशब्द आर्त पुकार भी हम नहीं सुन पाते।

राम फिर याद आते हैं। वानर, भालुओं, गिद्ध, गिलहरी, मधुकर, खग, मृग सबसे प्यार है उन्हें। गिलहरी उनके स्पर्श को आज तक अपने पृष्ठ भाग पर कोमल रोमावलियों के बीच श्वेत श्याम धारियों के रूप में धारण किये इतराती फिरती है तो वानरराज हनुमान देवत्व की श्रेणी में पहुँच जाते हैं। हम उनकी पूजा करने लगते हैं। राम का अनुगमन उन्हें पशु से देवता बना देता है।

अभी कुछ वर्षों पूर्व अखबारों में एक सूचना छपी। चीन में गौरैयों को मारने का एक अभियान छिड़ा। फसलों को बरबाद करती थीं वे, ऐसा कहा जाने लगा। अपने आँगन में उतरने वाली गौरैयों का ध्यान आया। मेरे एक मुट्ठी चावल में पचासों गौरैयों के साथ कबूतरों, गिलहरियों और बुलबुलों की भी प्रतिदिन दावत पूरी हो जाती है। कभी कोई आपसी कलह नहीं, संग्रह की प्रवृत्ति नहीं। दाना चुगना और दो चार दाने चोंच में भर अपने चिरौटों के लिए लेकर उड़ जाना। कई बार होली के मौके पर मग में घोला गया गुलाबी रंग उनके ऊपर भी छिड़कने की कोशिश की, ताकि दोबारा आने पर पहचान लूँ। पर हाय रे इन गौरैयों की निस्पृहता। कभी लौटीं, कभी नहीं लौटीं। मैं उनके गुलाबी रंग वाले पंख ढूँढ़ती रह जाती हूँ। कभी दिखाई दे जाने पर बच्चों सा उल्लास भीतर छा जाता है। ऐसी निःस्पृह और प्यारी जाति की गौरैयों को मारने का संकल्प? मैं सिहर उठती हूँ ऐसी क्रूरता पर। पृथ्वी की आकुलता मेरी अपनी आकुलता बन जाती है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग सौ प्रकार की चिड़ियाँ पृथ्वी पर से हमेशा के लिए लुप्त हो गईं हैं और एक हजार दो सौ प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं। यह सब घटित हुआ है तथाकथित, औद्योगिक क्रान्ति के बाद से। हमने रत्नगर्भा पृथ्वी से खनिजों का अन्धाधुन्ध दोहन किया, परमाणु बमों का जखीरा तैयार कर लिया, अनश्वर चीजों जैसे प्लास्टिक और पोलिथिन का उत्पादन कर धरती को पाट दिया, बिना उसकी बेचैनी को समझे। अब जब धुएँ, धूल, गुबार और अनेक बीमारियों से हमारा दम घुटने के कगार पर है तो हम इको-फ्रेण्डली का मन्त्र जपने के लिए विवश हैं। कुछ प्रगतिशील और स्त्रीवादी लेखक इसी तर्ज पर एक नया नारा गढ़ रहे हैं- इको-फेमिनिज्म।

इस 'इको' को समझने की आवश्यकता है। पर्यावरण के साथ साथ हमारे भीतर भी कोई अनुगूँज दबी पड़ी है, उसे भी गुनने की आवश्यकता है। अन्तरात्मा में कहीं न कहीं राम विराज रहे हैं। पूरी पृथ्वी पर उनके चरण चिन्ह आज भी हैं, इसीलिए बार बार वे सबकी स्मृति का विषय बन जाते हैं और इसीलिए बार बार पृथ्वी, जब भी दोहन और अत्याचारों से पीड़ित होती है, गाय का रूप धर परित्राण के लिए उन्हें पुकार उठती है। पृथ्वी के गोरूप धारण करने का मिथक केवल भारतीय मनीषा की कल्पना ही नहीं है अपितु दुनिया भर के पौराणिकी में है। इजिप्ट की पौराणिकी में ब्रह्माण्डीय गाय (Cosmic Cow) है तो ग्रीक में 'अर्थ मदर' का प्रत्यय है।

राम का भू पालन कुछ लोगों के लिए यूटोपिया हो सकता है। यूटोपिया ही सही, प्रकाश का भ्रम पालने में और अँधेरे से जूझने का संकल्प ले लेने में क्या बुराई है? रामराज्य का सपना आजादी के बाद कई भारतीय नेताओं ने देखा। शास्त्री जी ने देखा, गाँधी जी ने देखा, कई चिन्तकों और लेखकों ने देखा।

तुलसी ने राम राज्य की विशेषताओं को अपने मानस में सिद्धान्त की तरह स्थापित किया। विनोबा उसे प्रेमयोग और साम्ययोग (लोक नीति पृ.-212) के रूप में देखते हैं। वाल्मीकि राम राज्य के आदर्शों को कुछ इस तरह व्याख्यायित करते हैं—

काले वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षंविमला दिशः।
हृष्टपुष्टजनाकीर्ण पुरं जनपदास्तथा।।
नाकाले म्रियते कश्चिन्न व्याधिः प्रणिनां तथा।
नानर्थो विद्यते कश्चिद् रामे राज्यं प्रशासति।।

अर्थात् श्रीराम के शासनकाल में बादल समय पर बरसते थे। सदा सुमिक्ष (सुकाल) रहता था। सभी दिशाएँ निर्मल थीं। नगर और जनपद हृष्ट पुष्ट मनुष्यों से भरे रहते थे। किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती थी। प्राणियों को कोई रोग नहीं सताता था और राम के राज्य में किसी प्रकार का अनर्थ नहीं था। यानी पूरी पृथ्वी पर एक समन्वय और समरसता थी। प्रकृति के साथ तादात्म्य होना ही राम राज्य है। यह वही पृथ्वी है जिसके बारे में यजुर्वेद में कहा गया है कि- 'सुक्ष्मा चासि शिवा चासि, स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च।' अर्थात् यह पृथ्वी बल देने वाली है, कल्याण करने वाली है, आनन्ददायक है, उत्तम अन्न आदि के कारण ऊर्जस्वती है, और उत्तम रस आदि से युक्त पयस्वती है। वही यजुर्वेद अपने पहले ही मन्त्र में हमें सजग करता है- 'मा व स्तेनऽईशत माघशंसः' अर्थात् हममें से कोई चोर तुम्हारा स्वामी न बन पाए, पापी भी स्वामी न बन पाए। यह चोर और पापी कौन है? स्पष्ट सी बात है पृथ्वी के सन्तुलन को नष्ट करने वाला पापी है, उसके भौतिक संसाधनों का दोहन करने वाला चोर है। हम अपने आस पास दृष्टि दौड़ाएँ। क्या दो चार चोर और पापी हमारे अगल बगल भी नहीं घूम रहे? स्वच्छन्द, निर्द्वन्द्व? क्या राम के भू पालन या कृष्ण के गोपालन का अर्थ अलग से खड़ा दिखाई नहीं पड़ता? परब्रह्म के कदमों में लोटती कॉस्मिक काऊ? रामावतरण या कृष्णावतरण का सन्दर्भ अपने आप खुलने लगता है प्रकृति के नानाविध रंगों के साथ।

*